अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) छह लेश्या में तिर्यंच के भेद पाये जाते हैं-
(क) 5 (ख) 22
(ग) 10 (घ) 28 (ग)

(ii) अवधि दर्शन में जीव के कुल भेद हैं-
(क) 537 (ख) 247
(ग) 15 (घ) 222 (ख)

(iii) अभाषक में मनुष्य के भेद पाये जाते हैं-
(क) 101 (ख) 202
(ग) 217 (घ) 303 (ग)

(iv) अढ़ाई द्वीप के बाहर तिर्यंच के कुल भेद पाये जाते हैं-
(क) 20 (ख) 02
(ग) 46 (घ) 22 (ख)

(v) अमर में मनुष्य के भेद पाये जाते हैं-
(क) 202 (ख) 15
(ग) 86 (घ) 162 (ग)

(vi) पाँचवें ग्रैवेयक के देवों की आहारेच्छा का जघन्य काल है-
(क) 22 हजार वर्ष (ख) 27 हजार वर्ष
(ग) प्रतिसमय (घ) 26 हजार वर्ष (घ)

(vii) तीसरे देवलोक के देवों की आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल है-
(क) 2 हजार वर्ष (ख) पृथक्त्व दिवस
(ग) 7 हजार वर्ष (घ) 10 हजार वर्ष (ग)

(viii) चार कषाय भेद हैं-
(क) क्षयोपशम भाव का (ख) औदयिक भाव का
(ग) क्षायिक भाव का (घ) औपशमिक भाव का (ख)

(ix) दूसरे गुणस्थान में औदयिक भाव के भेद हैं-
(क) 21 (ख) 20
(ग) 19 (घ) 15 (ख)

(x) चौरेन्द्रिय जीव में लेश्या पायी जाती है-
(क) 1 (ख) 3
(ग) 4 (घ) 6 (ख)

(xi) मति अज्ञानी में योग नहीं पाया जाता है-
(क) आहारक काय योग (ख) कार्मण काय योग
(ग) औदारिक काय योग (घ) वैक्रिय काय योग (क)

(xii) अचरम में गुणस्थान है-
(क) 8 (ख) 13
(ग) 6 (घ) 1 (घ)

(xiii) चौथे गुणस्थान में क्षायोपशमिक भाव के भेद हैं-
(क) 12 (ख) 14
(ग) 22 (घ) 13 (क)

(xiv) लेश्या द्वार में सबसे कम जीव इस लेश्या में बताए हैं-
(क) तेजो लेश्या (ख) पद्म लेश्या
(ग) अलेशी (घ) शुक्ल लेश्या (घ)

(xv) जीव के 14 भेदों में से वाणव्यन्तर में भेद हैं-
(क) 14 (ख) 2
(ग) 4 (घ) 3 (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(i) इच्छापूर्वक किया गया आहार अनाभोग निर्वर्तित है। (नहीं)
(ii) चौथे गुणस्थानवर्ती जीव अनारम्भी नहीं है। (हाँ)
(iii) सिद्ध भगवान आरम्भी नहीं, तदुभयारम्भी है। (नहीं)
(iv) आत्मारम्भी-परारम्भी का थोकड़ा प्रज्ञापना सूत्र में चलता है। (नहीं)
(v) क्षायिक और पारिणामिक भाव रूप द्विक संयोगी भाव सिद्धों में मिलता है। (हाँ)
(vi) अचक्षुदर्शन क्षायोपशमिक भाव का भेद है। (हाँ)
(vii) वेदक समकित में तिर्यंच गति के दो भेद ही पाये जाते हैं। (नहीं)
(viii) एकांत पुरुषवेद में मात्र देवगति के ही भेद पाये जाते हैं। (हाँ)
(ix) महाविदेह क्षेत्र के मनुष्यों में परिहार विशुद्धि चारित्र नहीं होता। (हाँ)
(x) देवगति में संहनन नहीं माना जाता है। (हाँ)
(xi) नन्दीश्वर द्वीप में देवगति के 46 भेद पाये जाते हैं। (नहीं)
(xii) ऐसे शुक्ल पक्षी जीव जिन्होंने एक बार भी सम्यग्दर्शन को प्राप्त कर लिया, वे संसार परीत कहलाते हैं। (हाँ)
(xiii) पारिणामिक भाव के कुल 18 भेद होते हैं। (नहीं)
(xiv) उपशम चारित्र का गुणस्थान ग्यारहवाँ ही बताया गया है। (हाँ)
(xv) प्रथम तीन गुणस्थानों में औपशमिक और क्षायिक भाव नहीं होते है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(i)	अढ़ाई द्वीप में जीव के भेद	(क) 22	351
(ii)	अद्ध पुष्कर द्वीप में मनुष्य के भेद	(ख) 11	54
(iii)	भाषक में तिर्यंच के भेद	(ग) 4	13
(iv)	चक्षुदर्शन में तिर्यंच के भेद	(घ) 6	22
(v)	वेदक समकित में मनुष्य के भेद	(च) 1	55
(vi)	अवेदी में योग	(छ) 13	11
(vii)	शुक्ल लेश्या में उपयोग	(ज) 351	12
(viii)	सामायिक संयत में गुणस्थान	(झ) 12	4
(ix)	अनाहारक में लेश्या	(य) 54	6
(x)	अभव्य में गुणस्थान	(र) 55	1

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(i) मेरे पड़ने पर भी जो जीव के भेद विद्यमान रहे, हमेशा मिले, वे शाश्वत कहलाते हैं। विरह
(ii) हम वैताढ्य और कंचनगिरी पर मिलते हैं। जृम्भकदेव
(iii) मुझमें दो लेश्या पायी जाती है। तीसरी/पाँचवीं नरक का अपर्याप्त एवं पर्याप्त
(iv) मुझमें पाँच अनुत्तर विमान के दस भेद ही पाये जाते हैं। एकान्त सम्यग्दृष्टि
(v) मुझमें नरकानुपूर्वी का उदय नहीं होता है। सास्वादन समकित
(vi) मैं क्षायिक समकित पाने की एक समय पूर्व की अवस्था हूँ। वेदक समकित
(vii) सिद्धान्त के मतानुसार मैं अनाहारक अवस्था में ही होता हूँ। कार्मण काययोग
(viii) मुझमें अभव्य और सिद्ध दोनों का समावेश किया जाता है। अचरम
(ix) मुझमें एकमात्र दसवाँ गुणस्थान होता है। सूक्ष्म संपराय संयत
(x) मुझमें 1,2,4,13,14 ये पाँच गुणस्थान माने गये हैं। अनाहारक
(xi) मेरी आहारेच्छा का जघन्य काल 10 हजार वर्ष है। छठा देवलोक
(xii) मेरी आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल पृथक्त्व दिवस है। नव निकाय/व्यन्तर/ज्योतिषी

(xiii) मैं असंसार समापन्नक हूँ। सिद्ध

(xiv) उपशम मात्र मेरा ही होता है। मोहनीय कर्म

(xv) मैं अनादि सान्त हूँ, इसलिए सिद्धावस्था में मेरा अभाव हो जाता है। भव्यत्व भाव

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) एक दृष्टि में जीव के भेद लिखिए।

नरक	तिर्यंच	मनुष्य	देव	कुल
1	30	213	46	290

(ii) एकांत कापोत लेश्या में जीव के भेद लिखिए।
नारकी में-4, प्रथम-द्वितीय नरक- अपर्याप्त, पर्याप्त कुल 04।

(iii) परिहार विशुद्धि चारित्र में बासठिया लिखिए।
परिहार विशुद्धि संयत में- जीव-1, गुणस्थान-2, योग-9, उपयोग-7, लेश्या-3

(iv) चक्षुदर्शन का उपयोग कब से माना जाता है ?
अपर्याप्त अवस्था में जब चौरेन्द्रिय-पंचेन्द्रिय जीवों में इन्द्रिय पर्याप्ति पूर्ण हो जाती है, तबसे उनमें चक्षुदर्शन का उपयोग माना जाता है।

(v) अपरीत में बासठिया लिखिए।

अपरीत में- जीव-14, गुणस्थान-1, योग-13, उपयोग-6, लेश्या-6

(vi) ओज आहारी किसे कहते हैं ?

उत्पत्ति देश में जो आहार योग्य पुद्गलों का समूह है उसका आहार करने वाले ओज आहारी कहलाते हैं।

(vii) शुभ योगी किसे कहते हैं ?

जो उपयोग पूर्वक, सावधानी पूर्वक समत्त्व भावों के साथ योगों की प्रवृत्ति करता है, उसे शुभयोगी कहते हैं।

(viii) औदयिक भाव में असंयम को पाँचवें गुणस्थान तक मानने का कारण लिखिए।

यद्यपि पाँचवें गुणस्थान में आंशिक संयम आ जाता है, किन्तु फिर भी यहाँ असंयम का तात्पर्य-पूर्ण संयम का अभाव, ऐसा अर्थ मानकर इसे पाँचवें गुणस्थान तक मानना उपयुक्त है।

(ix) क्षायिक भाव किसे कहते हैं?

कर्म के आत्यन्तिक क्षय से प्रकट होने वाला भाव क्षायिक भाव है। यह भाव सादि-अनन्त है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) अमर में पाये जाने वाले जीव के भेद लिखिए।

अमर में 192 भेद (7 नारकी के, 86 युगलिक मनुष्य के और 99 देवता के ये सब अपर्याप्त)।

(ii) क्षयोपशम समकित में पाये जाने वाले जीव के भेद लिखिए।

क्षयोपशम समकिती में 275 भेद (नारकी के 13, सन्नी तिर्यंच के 10 और 15 कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य के अपर्याप्त-पर्याप्त, 30 अकर्मभूमिज सन्न मनुष्य के अपर्याप्त-पर्याप्त कुल 90 मनुष्य के, 15

परमाधामी, 3 किल्विषी के अपर्याप्त-पर्याप्त कुल 36 को छोड़कर देवता के 162 भेद)।

(iii) 102 बोल के बासठिये से वेद द्वार के बोलों की अल्पबहुत्व लिखिए।

सबसे थोड़े पुरुषवेदी, उनसे स्त्रीवेदी संख्यात गुण, उनसे अवेदी अनन्त गुण, उनसे नपुंसकवेदी अनन्त गुण और उनसे सवेदी विशेषाधिक हैं।

(iv) मनःपर्यव ज्ञानी में कार्मण काय योग नहीं पाये जाने का कारण लिखिए।

मनःपर्याय ज्ञानी नियमा साधु होते हैं। उनमें छठे से लेकर बारहवें तक सात गुणस्थान पाये जाते हैं। सिद्धान्त के मतानुसार कार्मण काय योग अनाहरक अवस्था में ही होता है, मन पर्यायज्ञानी आहारक ही होते हैं।

(v) दसवें गुणस्थान में अनाकार उपयोग नहीं मानने का कारण लिखिए।

दसवें गुणस्थान में जो भी जीव प्रवेश करता है, वह साकार उपयोग में ही प्रवेश करता है। वहाँ साकार उपयोग का अन्तर्मुहूर्त काल समाप्त होने के पहले ही दसवें गुणस्थान की अन्तर्मुहूर्त की स्थिति पूर्ण हो जाती है, इसलिए दसवें गुणस्थान में अनाकार उपयोग नहीं माना जाता।

(vi) पाँच स्थावर, तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य की आहारेच्छा का जघन्य-उत्कृष्ट काल लिखिए।

	जघन्य	उत्कृष्ट
पाँच स्थावर	प्रतिसमय	प्रतिसमय
तिर्यंच पंचेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त	दो दिन
मनुष्य	अन्तर्मुहूर्त	तीन दिन

(vii) छठे गुणस्थान में कृष्ण, नील, कापोत लेश्या में अनारम्भी क्यों नहीं माना है ?

कृष्ण, नील, कापोत लेश्याएँ अशुभ हैं, इस कारण से इन तीन लेश्याओं में रहे हुए छठे गुणस्थानवर्ती प्रमादी साधु अशुभ योगी ही होते हैं, अतः उनमें अनारंभी नहीं माने गये हैं।

(viii) क्षायिक भाव के भेद लिखिए।

क्षायिक भाव के 9 भेद- 1. केवलज्ञान, 2. केवलदर्शन, 3. क्षायिक सम्यक्त्व, 4. क्षायिक चारित्र, 5. अनन्त दान, 6. अनन्त लाभ, 7. अनन्त भोग, 8. अनन्त उपयोग, और 9. अनन्त वीर्य।

(ix) पाँच भावों में से किन-किन गुणस्थानों में कौन-कौनसे भाव पाये जाते हैं ?

पहले तीन गुणस्थानों में औदयिक, क्षायोपशमिक और पारिणामिक ये तीन भाव होते हैं। चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक आठ गुणस्थानों में पाँचों भाव, बारहवें गुणस्थानों में औपशमिक के सिवाय शेष चार भाव होते हैं, तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक ये तीन भाव होते हैं।